रिकार्ड– आखिर वो दिन आया.....ओमशांति प्रातःक्लास 26.12.67
मीठे2 रुहानी बच्चे यह गीत गा रहे हैं। बच्चे समझ रहे हैं कि कल्प2 बाद फिर से हमको धनवान बनाने, हेल्दी और वेल्दी बनाने ,पवित्रता ,सुख–शांति का वर्सा देने बाप आते हैं। ब्राह्मण लोग भी आशीर्वाद देते हैं ना। आयुष्वान भव। धनवान भव.....। तुम बच्चों को तो वर्सा मिल रहा है। आशीर्वाद की कोई बात नहीं है। बच्चे पढ़ रहे हैं। जानते हो कि पांच हजार वर्ष पहले भी हमको बाप ने आकर मनुष्य से देवता बल्कि नर से नारायण बनने की शिक्षा दी थी। बच्चे जो पढ़ते हैं वो जानते हैं। हम क्या पढ़ते हैं ,पढ़ाने वाला कौन है, इसमें भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हैं। यह तो कहेंगे ही। बच्चों को मालूम ही है कि यह तो राजधानी स्थापन हो रही है वा डीटी किंगडम स्थापन हो रही है। आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना हो रही है। पहले शूद्र थे फिर अब ब्राह्मण बने हैं। फिर देवता बनना है। हम शूद्र वर्ण के हैं यह दुनियां में किसको भी पता नहीं है। तुम बच्चे अब समझते हो कि यह तो सत्य बात है। बाप सत्य बताकर सत्यखंड स्थापन कर रहे हैं। सतयुग में तो पाप, झूठ आदि कुछ भी नहीं होता। कलियुग में ही अजामिल ,पापात्मायें होती हैं। यह समय बिल्कुल रौरव नर्क का ही है। दिन–प्रतिदिन रौरव नर्क दिखाई पड़ता रहेगा। मनुष्य ऐसा2 तमोप्रधान काम करते रहेंगे कि जो समझेंगे कि बिल्कुल ही तमोप्रधान बनती जा रही है। इसमें भी काम तो महान शत्रु है। कोई मुश्किल ही पवित्र और शुद्ध रह सकते हैं। आगे झंगम लोग होते थे वो कहते थे कि कलियुग आवेगा, 13वर्ष की कुमारियां बच्चे पैदा करेंगी.....ऐसे2 झंगम लोग कहते थे। अब वो सम भी हे। कुमार–कुमारियां आदि सभी गंद करते रहते हैं। जब बिल्कुल ही तमोप्रधान बन जाते हैं तब बाप कहते हैं कि मैं आता हूं। मेरा भी ड्रामा में पार्ट है। मैं भी ड्रामा में नूंधा हुआ हूं। तुम बच्चों के लिए कोई भी नई बातें नहीं हैं। बाप समझाते हैं। ..... चक्र लगाया है। अभी नाटक पूरा होता है। अब बाप को याद करो तो तुम सतोप्रधान बन सतोप्रधान दुनियां का मालिक बन जावेंगे। कितना साधारण है। बाप कोई इतना महत्व नहीं देते हैं। यह तो मेरा पार्ट ही है। नई बात नहीं है। हर पांच हजार वर्ष बाद मुझे आना पड़ता है। मैं ड्रामा में बंधायमान हूं। आकर बच्चों को बहुत ही यह याद की यात्रा बताता हूं। अंत मते सो गते वो इसी समय के लिए गायन है। यह अंत काल है ना। बाप युक्ति बताते हैं कि मामेकम् याद करो तो सतोप्रधान बन जावेंगे। बच्चे भी तो समझते हैं ना कि हम नई दुनियां का मालिक बनेंगे। बाप बार2 कहते हैं कि नथिंग न्यू। एक जिन्न की कहानी सुनाते हैं ना। उसने कहा काम दो। तो कहा कि सीढ़ी ही बैठ कर उतरो और चढ़ो। बाप भी कहते हैं कि यह तो खेल ही उतरने और चढ़ने का है। पतित से पावन , पावन से फिर पतित बनना है। यह कोई डिफिकल्ट (बातें) भी नहीं हैं। है बहुत ही सहज ;परंतु कौन सी है वो नहीं समझने कारण शास्त्रों में लड़ाई की बातें लिख दी हैं। वास्तव में माया रावण पर जीत पाना यह तो बहुत बड़ी लड़ाई है। बच्चे जानते हैं कि हम बार2 बाप को याद करते हैं फिर याद टूट जाती है। माया दीवा बुझा देती है। इस पर गुलबकाबली की भी कहानी है ना। बच्चे जीत पाते हैं। बहुत अच्छे चलते हैं। फिर माया आकर दीयरा बुझा देती है। बच्चे भी कहते हैं कि बाबा माया के तूफान तो बहुत ही आते हैं। तूफान भी अनेकों प्रकारों के बच्चों को घेरते हैं। कब2 तो ऐसा तूफान जोरों से आता है जो कि आठ/दस वर्ष के पुराने अच्छे2 झाड़ भी गिर पड़ते हैं। बच्चे जानते हैं वर्णन भी करते हैं। अच्छे2 माला के दाने थे, आज हैं ही नहीं। यह भी मिसाल है कि गज को ग्राह ने खाया। यह है माया के तूफान। बाप कहते हैं कि इन पांच विकारों से सम्भाल रखते रहो। याद में रहेंगे तो मजबूत हो जावेंगे। देहीअभिमानी बनो। यह शिक्षा बाप की एक ही बार मिलती है। ऐसा कब और कोई कहेंगे नहीं कि आत्मअभिमानी बनो। सतयुग में भी ऐसे नहीं कहेंगे। नाम,रूप ,देश,काल सब कुछ रहता ही है। इस समय तुमको समझाता हूं। बच्चों अब वापस जाना है। तुम पहले सतोप्रधान थे फिर सतो,रजो,तमो में आये हो। तुमने

पूरे 84जन्म लिए हैं। इसमें भी नम्बर वन तो इनको ही कहते हैं। औरों के तो 84 से कम जन्म भी होते हैं। यह पहले2 श्रीनारायण थे। इनके लिए कहते हैं तो गोया सभी के लिए ही समझ जाते हैं। बहुत जन्मों के अंत में ज्ञान लेकर फिर वो ही ....बनते हैं। झाड़ में भी दिखाया है ना। यह श्रीनरायण फिर पिछाड़ी में यह ब्रह्मा खड़ा है। बच्चे राजयोग सीख रहे हैं। प्रजापिता को कब भी परमपिता नहीं कहा जाता है। परमपिता एक को ही कहा जाता है। यह देहधारी है वो विदेही विचित्र है। लौकिक बाप को पिता कहेंगे। इनको प्रजापिता कहेंगे। वो परमपिता तो परमधाम में रहता है। प्रजापिता ब्रह्मा का निवास स्थान परमधाम को नहीं कहेंगे। वो तो यहां पर साकारी दुनियां में होगा ना। सूक्ष्मवतन में भी नहीं होता है। प्रजा तो है ही स्थूलवतन में। यह सृष्टि की आ.म.अं. का राज बाप ही तुम बच्चों को समझाते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा को भगवान नहीं कहेंगे। भगवान का कोई भी शारीरिक नाम नहीं है। मनुष्य तन जिन पर कि दूसरा नाम पड़ता है उनसे तो वो न्यारा ही है। आत्माएं वहां पर रहती हैं तो नाम–रूप से न्यारी हैं ;परंतु आत्मा तो है ही ना। परमपिता भी वहां पर ही रहते हैं। नाम–रूप से न्यारा कहा है तो वो मनुष्य समझते हैं कि वो तो बिल्कुल ही निल है। उनको बाप ही नहीं समझने कारण कह देते हैं कि वो तो पत्थर–भित्तर में है। आगे ऐसे नहीं कहते थे। 24अवतार कहते हैं फिर वो भी तो रांग हो जाता है। युगे2 आते हैं तो भी तो चार या पांच होने चाहिए थे। अभी तो ठिक्कर2 में कह देते हैं। कितने तो बेसमझ बन गए हैं। बाप को कितनी गालियां देते हैं। साधु–संत आदि कुछ भी नहीं जानते हैं। वो लोग सिर्फ घर–बार छोड़ते हैं। बाकी दुनियां के विकारों के अनुभवी तो हैं ही ना। छोटे बच्चों को तो कुछ भी पता नहीं रहता है। इसलिए ही उनको महात्मा कहा जाता है। पांच विकारों को तो वो जानते ही नहीं हैं। छोटे बच्चे को पवित्र कहा जाता है। इस समय तो कोई भी पवित्र हो ही नहीं सकती है। छोटे से बड़ा होगा फिर भी पतित तो होंगे ही ना। बाप समझाते हैं सबका अलग2 पार्ट इस ड्रामा में नूंधा है। इस चक्र में कितने शरीर लेते हैं,कितने कर्म करते हैं, जो सभी फिर भी रिपीट होना है। पहले2 तो आत्मा को पहचानना है कि आत्मा कितनी छोटी है। उसमें ही 84जन्मों का अविनाशी पार्ट भरा हुआ है। यह है सबसे वंडरफुल बात। आत्मा भी अविनाशी है, ड्रामा भी अविनाशी है। बना बनाया हुआ है। ऐसे नहीं कहेंगे कब से शुरू हुआ? .....कहते हैं ना आत्मा कैसी है ,यह ड्रामा कैसे बना हुआ है। इसमें कोई कुछ भी कर नहीं सकते हैं। जैसे समुद्र अथवा आकाश का अंत नहीं निकाल सकते। यह भी इतनी ही छोटी आत्मा है तो उसमें ही 84जन्मों का पार्ट चलता ही रहता है। यह अविनाशी ड्रामा है। जैसे बाबा वंडरफुल है वैसे ही ज्ञान भी वंडरफुल ही है। कब भी कोई बता नहीं सकते हैं। इतने सभी एक्टर्स अपने2 पार्ट बजाते ही आते हैं। नाटक कब बना यह प्रश्न कब कोई उठा नहीं सकते हैं। बहुत कहते हैं भगवान को क्या जरूरत थी दुःख–सुख दुनियां में बैठ बनाने की। अरे, यह तो अनादि है ना। प्रलय आदि होती ही नहीं है। बनी बनाई हुई है। यह ऐसे थोड़े ही कह सकते हैं कि क्यों बनाई। आत्मा का ज्ञान भी तुमको बाप तभी सुनाते हैं जबकि तुम बेसमझदार बनते हो। तुम दिन–प्रतिदिन उन्नति को पाते रहते हो। पहले2 तो बाबा बहुत थोड़े ही सुनाते थे। फिर भी कशिश तो ही ना। उसने ही खींचा। भट्ठी की भी कशिश थी। शास्त्रों में भी दिखाया है कि कृष्ण को कंस की पुरी से निकाल कर ले गए। अभी तुम समझते हो कि कंस आदि तो वहां पर होते ही नहीं हैं। क्या2 तो बातें लिख दी हैं। गीता ,भागवत,महाभारत यह सभी बाप से कनेक्शन रखती है। है कुछ भी नहीं। बाप समझाते हैं कि यह भक्ति मार्ग में जो भी वेद–शास्त्र आदि सामिग्री बनी हुई है। यह सभी कुछ दुब्बण है। भक्ति कब से शुरू हुई है यह भी कोई जानते नहीं हैं। लाखों वर्षों की तो कोई बात ही नहीं है। समझते हैं कि यह दशहरा आदि परम्परा से चलता ..... (मुरली अधूरी है)